दिल्ली गर्ल

संजना

Yayawari
via bhojpuri

अनुवादक
सुधीर मिश्रा

आवाज
प्रतिमा योगी

दिल्ली गर्ल

कहानी

लेखिका-संजना तिवारी

अनुवादक –सुधीर कुमार मिश्र

ईश्वर बृज'' फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवम्बर, 2022

दिल्ली के मौसम अपना पूरा शबाब प रहे,उफान प रहे,सांझ गते से अब पातर करिया ओढ़नी में अपना के तोपे लागल रहे। लाखन गो मदमस्त दिल अपना आँखि के दांतन से ओह सांझ के शबाब के चबात रहले,बाक़िर उ एह कुल्ह बातन से बेख़बर होइके अपना टाइपराइटर के टिक...टिक..टिक में बाझल रहे। उ जतना जल्दी हो सके अपना अस्तित्व के कुल्ह भागन के पन्नन में लुकवा दिहल चाहत रहे,जेकरा के बाद में ओकर लइका-फईका ओकरा के जोड़ के , अपना माई के नक्शा के बुझसु आ जानसु।

ओकर ई व्यस्तता के बिचे अचानके गरम नशीला एगो ओंठ ओकरा कान से जाके सटल, गते-गते उ ओंठ ओकरा कानन के चूमत ओकरा गर्दन तक जाए लागल अउरी ओंठन के संगे-संगे नाक ओकरा दुनो गालन के सहलावे लागल।

डाँड़ प अँगुरियन के बल चलत दु गो हाथ कसत चलल गइल.... “आजु त एकरा जगहि प हमरा के अपना बाहिं में ले ल” ... अनुराग के फुसफुसाइल आ प्यार से लबालब भरल आवाज़ ओकरा कान में सुनाईल.....

उ एकहि झटका में कुर्सी से उठ गइल , आ बड़ा तेजी से टाइपराइटर से उ कागजन के खींच के लपेटत बोलल..

“अरे रवा!!! बड़ा जल्दिये आ गईनी आज त!”